ISSN 2393-051X

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सुभाषचन्द्र बोस के राजनैतिक विचारों का योगदान

डॉ. भावना यादव

सहायक प्राध्यापक-राजनीति विज्ञान

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के एक ओजस्वी व्यक्ति जो समाजसेवी, प्रखरवक्ता, महान सेनापति, राजनीति के विद्वान, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी पहचान स्थापित करने वाले महान कूटनीतिज्ञ सुभाषचन्द्र बोस उन महान शहीदों में से हैं जिन्होंने उस समय की प्रचलित धारा (उदारवाद) के विपरीत स्वतंत्रता के मार्ग स्थापित करने का प्रयास किया। इस शोध पत्र में सुभाषचन्द्र बोस द्वारा आजाद हिन्दी फौज का गठन और विदेश में रहकर देश के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका का निर्वाहन करने वाले उनके राजनैतिक विचारों को समाहित करने का प्रयास किया जा रहा है। जिनके प्रभाव स्वरूप देश की जनता स्वतंत्रता को लेकर न केवल जागरूक हुई वरन् आत्मश्विास के साथ ब्रिट्रिशराज के विरूद्ध उठ खड़ी हुई।

मुख्य शब्द - स्वतंत्रता, आंदोलन, आजाद हिन्द फौज।

''भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के प्रणेता सुभाषचन्द्र बोस का जन्म कोदालिया के जानकीनाथ बसु तथा प्रभावती के घर पर उड़ीसा राज्य के कटक जिले में 23 जनवरी 1897 को शनिवार के दिन हुआ था।''[1] जो आगे चल कर नेताजी के नाम से जाने गये वे संभवतः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एकमात्र ऐसे सेनानी थे जिसने भारत की स्वतंत्रता के लिये भारत भूमि से दूर विदेशों में आजाद हिन्द फौज के नाम से एक विशाल सैन्य संगठन को स्थापित कर दिया था।

यहां तक पहुंचने की उनकी यात्रा के प्रथम पड़ाव में वे आई.सी.एस. की परीक्षा में चौथे स्थान पर चयनित हुये थे परंतु उसे छोड़ कलकत्ते में देशबंधु चितरंजन दास के नेतृत्व में कार्य शुरू किया और स्वराज पार्टी के टिकट पर कलकत्ता कार्पोरेशन का चुनाव जीता यहीं से उनकी राजनैतिक यात्रा और भारत को स्वतंत्र करने के संघर्ष की यात्रा प्रारंभ हुई। जिसमें कई बार वे जेल गये। ''भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की भूमिका निसंदेह एक अदम्य साहसी एवं अद्वितीय वीर योद्धा की थी। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मातृभूमि के लिए अर्पित कर दिया था। राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष त्याग और समर्पण के मूर्त रूप थे, उनकी भाषा बलिदान और संघर्ष की थी। देशहित के सामने उनके लिए अन्य सुख

महत्त्वहीन थे और देश की स्वतंत्रता के लिए जीवनभर कष्ट सहने में ही उन्हें परम संतोष मिला। सत्य तो यह है कि कठिनाइयां सहने में, त्याग और बलिदान में स्वतंत्रता संग्राम में किसी अन्य सेनानी को उनके समकक्ष नहीं रखा जा सकता।''[2]

1938 में हरिपुर कांग्रेस में उन्हें अध्यक्ष बनाया गया। 1939 में उन्होंने कांग्रेस की नीतियों से मतभेद होने के कारण त्यागपत्र दे दिया और फारवर्ड ब्लाक का संगठन किया। वास्तव में बोस को समझौतावादी नीति न पसंद थी वे अपनी प्रकृति और प्रवृत्ति दोनों से विद्रोही थे। उनके द्वारा संचालित जन-आंदोलन में उन्होंने सरकार से मांग रखी कि तत्काल अस्थायी सरकार का गठन कर सरकार अपनी शक्तियां इस अस्थायी सरकार को हस्तांतरित कर दें। फलस्वरूप सरकार ने उन्हें नजरबंद कर दिया परंतु वे वहां से निकलने में सफल हुये और काबुल, फारस, रूस, जर्मनी होते हुये जापान पहुंचे।

''रास बिहारी बोस की अध्यक्षता में उन्होंने भारतीय स्वाधीनता लीग स्थापित की तथा भारतीय युद्ध बंदी कप्तान मोहन सिंह की कमांड में 1942 की 15 फरवरी को सिंगापुर के पतन पर पकड़े गये 40,000 भारतीय युद्ध बंदियों के साथ, आजाद हिन्दी फौज का निर्माण किया, जिसकी औपचारिक स्थापना 1 सितम्बर 1942 को हुई। इसके आदर्श थे, एकता वफादारी व बलिदान।''[3] ''आजाद हिन्द संघ का एकमात्र लक्ष्य था - हिन्द की आजादी''[4] 2 जुलाई 1943 को बोस सिंगापुर पहुँचे और सिंगापुर के टाऊन हॉल के सामने आजाद हिन्द संघ का जोरदार प्रदर्शन हुआ जिसमें भाषण देते हुये बोस ने दिल्ली चलो का नारा दिया। 5 जुलाई 1943 को रास बिहारी बोस ने भारतीय स्वतंत्रता लीग का प्रधान पद सुभाषचन्द्र बोस को सौंप दिया और स्वयं मुख्य परामर्शदाता बने रहे। 21 अक्टूबर 1943 को सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सेना के सर्वोच्च सेनापति के रूप में स्वतंत्र भारत की 'अस्थायी सरकार' का गठन किया। ''सुभाषचन्द्र बोस द्वारा गठित अस्थायी सरकार को 23 अक्टूबर को जापान सरकार ने मान्यता प्रदान कर दी और प्रतिज्ञा की कि प्रत्येक संभव सहयोग तथा समर्थन आजाद हिन्दी सरकार को भारत की पूर्ण स्वाधीनता के युद्ध में दिया जायेगा। इसके तीन दिन बाद जर्मन सरकार के विदेश मंत्री रिपन ड्राप ने सरकारी तौर पर सूचित किया जर्मन आजाद हिन्दी सरकार को स्वीकार करती है। इसी प्रकार अनेक देशों जिनमें स्वतंत्र वर्मा, स्वतंत्र फिलीपिन्स, इटली, चीन, क्रोशिया, थाइलैंड आदि ने भी इस सरकार को अपनी सहमति और मान्यता प्रदान कर दी।''[5]

टोकियो में जनरल तोजो ने घोषणा की कि वह अंडमान निकोबार द्वीप समूहों को अस्थायी सरकार की आजाद हिन्द सेना को सौंप देंगे। जहां 31 दिसम्बर 1943 को सुभाषचन्द्र बोस ने भारत के प्रथम स्वतंत्र प्रांत में अपने कदम रखे और अंडमान निकोबार का नाम बदलकर 'शहीद' और 'स्वराज्य' द्वीप रखने की घोषणा की। आजाद हिन्द फौज ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन हेतु विषम परिस्थितियों में संघर्ष किया। यह वह संघर्ष था जिसके सकारात्मक परिणाम सफलता के रूप में तो नहीं मिले। वरन् आजाद हिन्द फौज के इस आंदोलन ने यह स्थापित किया कि भारतीयों से संबंधित मामले तय करने का अधिकार भारतीयों को ही है साथ ही इस संघर्ष ने भारत में अपने कानून चलाने के ब्रिट्रिश अधिकारों पर भी सवाल खड़े कर दिये और सारे देश का

ISSN 2395-051X

संयुक्त नारा था ब्रिट्रिश भारत छोड़ो।

वास्तव में 1938 से 1944 तक नेताजी की यह यात्रा उनके राजनैतिक यथार्थवादी विचारधारा का परिणाम थी। उनके विचारों में मांगना, विनम्रता, गिड़गिड़ाना और अहिंसा का स्थान नहीं था। भारत की स्वतंत्रता के लिये केवल वार्ता और आंदोलन के स्थान पर कठोर व्यवहारिक संघर्ष के वे पक्षधर थे। उनका मानना था कि राजनीति में आदर्शवाद का कोई स्थान नहीं है। वे उग्र राष्ट्रवादी थे। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारत की स्वतंत्रता के लिये 'आजाद हिन्द फौज' का संगठन किया। उन्हें फासिस्ट भी माना जाता था। जिसका कारण संभवतः भारत को ब्रिट्रिश साम्राज्यवाद से मुक्त करने की जो तीव्र छटपटाहट थी उसी ने कुछ कुछ अंशों में उन्हें फासीवादी विचारों का समर्थक बना दिया था और उनका हिंसात्मक संग्राम इसलिये फासीवादी लगा क्योंकि उन्होंने यूरोप और एशिया की फासीवादी ताकतों से सशस्त्र सहायता प्राप्त की थी।

''बोस को फासीवाद के अतिवादी सिद्धांतों में विश्वास नहीं था। उन्होंने कभी साम्राज्यवादी प्रसार का समर्थन नहीं किया।''[6] ''बोस को फासिस्ट'' कहा गया था, क्योंकि उन्होंने 18 दिसम्बर 1938 को प्रकाशित पंडित जवाहरलाल नेहरू के इस मत को करारी चुनौती दी थी कि संसार को किसी न किसी रूप में कम्युनिज्म और फासिस्टवाद में से किसी एक का चुनाव करना पड़ेगा और उस स्थिति में उनकी (नेहरूजी) सहानुभूति कम्युनिज्म के साथ होगी।''[7] यहां यह विस्मृत नहीं करना चाहिये कि 1930 से 1938 तक बोस ने गाँधजी के अहिंसात्मक आंदोलन को अपनी पूरी शक्ति से समर्थन दिया। परंतु जब वे कांग्रेस से अलग होकर एक शक्ति के रूप में उभर रहे थे और अपनी यूरोप यात्रा में हिटलर और मुसोलनी से मिले और उनकी भारत को स्वतंत्र कराने हेतु सहायता भी स्वीकार की। तब वे देश में गाँधी समर्थकों की दृष्टि में फासिस्टवादी हो गये। फासिज्म दमन आधारित शासन व्यवस्था है जबकि बोस तो शासन करने के लिये संघर्ष नहीं कर रहे थे वे तो देश से ब्रिट्रिश शासन के दमन का विरोध कर भारत की स्वतंत्रता का संघर्ष कर रहे थे।

वास्तव में ''बोस एक ऐसे ओजस्वी व्यक्तित्व थे जिनके लिए आजादी का अर्थ भारत की आम जनता के चेहरे पर खुशहाली लाने और उसका खोया हुआ गौरव दिलाने से था ऐसी आजादी जिसमें देश की जनता अपनी भलाई के फैसले स्वयं करने के लिये स्वतंत्र हो, जिसमें सभी वर्गो, जातियों, धर्मो को बिना भेदभाव के विकास का अवसर मिले और जिसके चलते भारत वास्तविक अर्थो में सार्वभौम गणराज्य बन सके, आज अगर हम यह लक्ष्य पा सके है तो उसमें नेताजी के संघर्ष, जिजीविषा, रणनीति और बलिदान का अतुलनीय योगदान है।''[8]

उन्होंने टोकियो विश्वविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुये 1944 में कहा था'' स्वतंत्र हो जाने पर यदि हम एक राष्ट्र के रूप में संगठित होना चाहते हैं, तो यथार्थ में हमें कठोर परिश्रम करना होगा। राष्ट्रीय एकता और संगठन को विकसित करने के लिये अनेक बातों की आवश्यकता है, यथा एक सामान्य भाषा, एक सामान्य वेशभूषा, एक सामान्य आहार इत्यादि ..... लोगों को यह अनुभव कराने के लिये कि वे एक राष्ट्र के हैं, शिक्षित करना होगा और लोगों को अभ्यास कराना होगा।'' बोस ने युवा शक्ति को संगठित कर उनमें

राजनैतिक चेतना जाग्रत की। वे भारत में कर्मयोग चाहते थे। वे प्रगतिशील राष्ट्रवाद के प्रणेता थे। वे स्वतंत्रता के साथ समानता के समर्थक थे। स्वतंत्र भारत की सशक्त अर्थव्यवस्था के लिये वे समाजवाद को उत्कृष्ट मानते थे। बोस ने कहा कि ''मेरे मस्तिष्क में कोई संदेह नहीं है कि संसार की तरह भारत का परित्राण समाजवाद पर निर्भर है भारत को दूसरे राष्ट्रों के अनुभव से सीखना और लाभ उठाना चाहिए। किंतु भारत की अपनी आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुकूल अपनी कार्यप्रणाली विकसित करने में भी समर्थ होना चाहिये। किसी सिद्धांत को व्यवहार में लाते समय इतिहास और भूगोल को असंगत घोषित नहीं कर सकते, अगर आप ऐसा करते हैं तो असफल ही होंगे। इसलिये भारत को समाजवाद के अपने प्रकार को विकसित करना चाहिये। समाजवाद के उस रूप में जो भारत विकसित करेगा, कुछ नया और मौलिक होगा जो संपूर्ण विश्व के लिये लाभदायक भी होगा।''[9]

वास्तव में वे भारत को राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक सभी स्तरों पर पूर्ण स्वतंत्रता दिलाने के लिये प्रयासरत थे। जिसके लिये वे सतत् जनता को जागरूक करते रहे। उनका मानना था कि राजनीतिक संघर्ष और सामाजिक संघर्ष साथ-साथ चलेंगे।'' जो दल भारत के लिये राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करेगा वही दल जनता को सामाजिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता भी दिलायेगा।''[10] वे परतंत्रता, अन्याय और अनैतिकता को अभिशाप मानते थे। उनका कहना था असमानता के विरूद्ध सभी को संघर्ष करना चाहिये।

वास्तव में सुभाषचन्द्र बोस ने स्वतंत्रता आंदोलन में कम समय में एक ऐसा सशक्त मार्ग दिखाया जो उस वक्त की परिस्थितियों में लगभग असंभव था। देश उस वक्त गाँधीवादी विचारधारा से पूर्ण रूप से प्रभावित था। गाँधीजी की विचारधारा से अलग अन्य किसी विचारधारा से स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है इसे व्यवहारिक रूप से बोस ने स्थापित किया। किसी भी देश में किसी एक विचारधारा को पूर्णतः सत्य मानकर उस पर चलना संभव नहीं होता। फिर भारत तो विषमताओं और विभिन्नताओं का देश था। जो बिखरा हुआ था। बोस ने भी प्रारंभिक दौर में इसी विचारधारा का अनुसरण किया परंतु पूर्ण स्वतंत्रता की शीघ्र चाह ने उन्हें ऐसी विचारधारा का राही बनाया जो देश में ही नहीं वरन् विदेशों से भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का संचालन करने में सहयोगी हुई।

वास्तव में द्वितीय विश्वयुद्ध में परिस्थितियां नहीं बदलती तो आजाद हिन्द फौज के संघर्ष का परिणाम सकारात्मक होता। परंतु फिर भी आजाद हिन्द फौज स्वतंत्रता संघर्ष के पटल का वह अविस्मरणीय संगठन थी जिसके नेता बोस थे। जिन्होंने केवल सैन्य संगठन नहीं बनाया वरन् आजाद हिन्द सरकार बनाई। एक ऐसी सरकार जिसका अपना ध्वज था अपना बैंक था, अपनी मुद्रा थी, अपना डाक टिकट था, अपना रेडियो सिस्टम था अपनी गुप्तचर सेवा थी। नेताजी ने सीमित साधनों में लोगों को स्वतंत्रता संघर्ष हेतु व्यवहारिक रूप से जागरूक किया। इतना ही नहीं उन्होंने आजाद हिन्दी फौज में बुगन विंग (रानी लक्ष्मीबाई फौज) की स्थापना उस समय की जबकि महिलाओं को पुरूषों की तुलना में कम आंका जाता था। उन्होंने उस समय महिलाओं की शक्ति को समझा और उन्हें पुरूषों के समकक्ष स्थान भी दिया। वास्तव में उनका योगदान मील का पत्थर है।

रंगून के प्रसिद्ध जुबली हॉल में अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा ''स्वतंत्रता आपसे बलिदान मांग रही

ISSN 2395-031X

है। उसके लिए हमें सब कुछ देना है - सब कुछ। अपना धन, बुद्धि, प्राण अपना सर्वस्व। तुमने अभी तक बहुत कुछ दिया है स्वर्ण के कोष, फड़कते हुए भुजदंड, धड़कते हुए दिल। मगर आजादी की प्यास इतने से नहीं बुझती। स्वतंत्रता की देवी को आज अपना शीश-पुष्प चढ़ा देने वाले पागल पुजारियों की आवश्यकता है। आजादी की लड़ाई में विजय की शर्त खून की बूंदों में लिखी जाती है। 'तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''[11] उनके इस आह्वान से लोग त्याग बलिदान और संघर्ष के लिये प्रेरित हुये।

यह वर्ष है नेताजी की 125वीं जयंती का वे भारतीय इतिहास के ऐसे शहीद थे जिन्होंने हजारों युद्ध बंदियों को संगठित कर देश की स्वतंत्रता हेतु प्रयास किया। उन्होंने भारतीय राजनीति में राजनैतिक यथार्थवाद को स्थापित किया। उन्होने उस समय अपनी राजनैतिक सक्रियता से अनेको राष्ट्रों से न केवल मित्रवत् संबंध स्थापित किये वरन् भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनसे सहयोग भी लिया। भारतीय राजनीति और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। उनका योगदान इस संदर्भ में भी है कि सदैव लक्ष्य महत्वपूर्ण होता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिये किन साधनों और विचारों का प्रयोग हो रहा है वह नगण्य होता है। परतंत्रता के उस दौर में भगत सिंह, तिलक, बोस और गाँधी या अन्य कोई भी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहा हो उसका लक्ष्य देश की स्वतंत्रता ही था। रास्ते और विचारधारायें भले ही भिन्न थी। परंतु इस महासंग्राम में हर क्रांतिकारी का अमूल्य योगदान था। जिसके कारण भारत स्वतंत्र हुआ। सुभाषचंद्र उन क्रांतिकारियों में थे जिन्होंने भारतीय नेतृत्व को वैश्विक पहचान दिलाई और स्वतंत्रता आंदोलन की नई राहों का निर्माण किया। उन्होंने परतंत्र भारत के कुछ हजार लोगों को संगठित कर भविष्य के भारत की रूपरेखा निर्धारित की।

संदर्भ -

1. त्रिपाठी, प्रयाग नारायण, नेता जी संपूर्ण वाड्मय भाग - 1, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, 1982, पृ. 31
2. डॉ. जयश्री - स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम नायक : नेताजी सुभाष, अभिनव ज्योति, आगरा, 1998, स्वर्ण जयंती अंक
3. मिश्रा, प्रो. आशा, भारत का इतिहास (1740 से 1950), म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ. 399
4. कमल, एम.पी., नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, एपीएच पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2012, पृ. 66
5. चटर्जी रेखा, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस एण्ड द आइ. एन. ए., कुनाल पुस्तक संसार, पृ. 154
6. बोस के साम्राज्य विरोधी विचार, दसमुख, 1937
7. मालवीय, श्री पद्माकांत, कांग्रेसी नेताओं ने उन्हें फासिस्ट बताया, पृ. 86
8. खान, डॉ. नगमा, सुभाषचन्द्र बोस - राजनीतिक एवं दार्शनिक विचार, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2011, पृ. 239
9. सुभाषचन्द्र बोस का ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस से अध्यक्षीय भाषण (कलकत्ता) 4/7/31
10. सुभाषचन्द्र बोस - द इंडियन स्ट्रगल, 1920-42, आक्सफोर्ड इंडिया पेपर बेक, पृ. 413
11. सत्य शकुन - मैं तुम्हें आजादी दूँगा, भाग-1, एपीएच पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2013, पृ. 146-174